2

पवित्र आत्मा कौन है?

पवित्र आत्मा कौन है? ध्यान दें कि प्रश्न यह नहीं है कि ''पवित्र आत्मा *क्या* है?'' बल्कि यह है कि ''पवित्र आत्मा *कौन* है?'' कुछ धार्मिक लोग पवित्र आत्मा को बेजान अस्तित्व या निर्जीव प्रभाव के रूप में मानते हैं, परन्तु परमेश्वर का वचन उसे एक व्यक्ति अर्थात परमेश्वरत्व के ईश्वरीय सदस्य के रूप में दिखाता है।

उसकी वर्णनात्मक विशेषताएं

यूहन्ना 14:16 में यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''और मैं पिता से विनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।'' यह आयत पवित्र आत्मा को यीशु के चेलों के लिए अनन्तकालिक सम्बन्ध देने के स्पष्ट उद्देश्य के लिए स्वर्ग से पृथ्वी पर एक ईश्वरीय सहायक के रूप में भेजा गया बताती है।

यीशु ने पवित्र आत्मा को ''सहायक'' ही नहीं, बल्कि ''शिक्षक'' भी बताया है। यूहन्ना 14:26 में यीशु ने अपने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की, ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें *सिखाएगा,* और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।'' एक सच्चे चेले का परमेश्वर की महिमा और मसीही जीवन जीने के लिए आत्मा के निर्देश, सहायता और सामर्थ पर निर्भर होना आवश्यक है। यीशु ने पवित्र आत्मा को शिक्षक और सहायक के रूप में बताया और उसने आत्मा के लिए हमेशा ''वह'' और ''उसे'' के व्यक्तिवाचक सर्वनाम का इस्तेमाल किया।

हमारे ''सहायक'' और ''शिक्षक'' के रूप में पवित्र आत्मा में मन (रोमियों 8:27), इच्छाएं (1 कुरिन्थियों 12:11) और भावनाएं (तुलना करें रोमियों 15:30; इफिसियों 4:30) हैं। हम पाते हैं कि कई अवसरों पर उसने आरम्भिक चेलों से सीधे बात की। उसने अन्ताकिया के भविष्यवक्ताओं और शिक्षकों से कहा, ''मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिस के लिए मैं ने उन्हें बुलाया है'' (प्रेरितों 13:2)। बाद में, पवित्र आत्मा ने पौलुस को एशिया में वचन सुनाने से रोका (प्रेरितों 16:6, 7)।

व्यक्तित्व वाला होने के कारण, पवित्र आत्मा की निन्दा की जा सकती है (मत्ती 12:31, 32), इससे झूठ बोला जा सकता है (प्रेरितों 5:3), इसे शोकित किया जा सकता है (इफिसियों 4:30), अपमानित किया जा सकता है (इब्रानियों 10:29) और इसका विरोध किया जा सकता है (प्रेरितों 7:51)। ऐसे कार्यों से केवल व्यक्ति ही प्रभावित होते हैं। सो हमें निष्कर्ष निकालना होगा कि पवित्र आत्मा ''वस्तु'' के बजाय ''व्यक्ति'' अधिक है।

उसका ईश्वरीय स्वभाव

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति तो है, पर वह ''केवल एक व्यक्ति'' से कहीं बढ़कर है, क्योंकि उसमें परमेश्वरत्व के साथ ईश्वरीयता की विशेषताएं भी हैं। वह ''सनातन आत्मा'' (इब्रानियों 9:14) है, जो ''परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है'' (1 कुरिन्थियों 2:10)। वह सर्व-सामर्थी (लूका 1:35; रोमियों 15:19) और सर्व-व्यापक (भजन संहिता 139:7-10) है। ये सभी गुण परमेश्वर के हैं। जब हनन्याह ने पवित्र आत्मा से झूठ बोला था तो पतरस ने उस पर स्वयं परमेश्वर से झूठ बोलने का आरोप लगाया था (प्रेरितों 5:3, 4)।

पवित्र आत्मा परमेश्वर का एक व्यक्ति है, जो पिता और पुत्र के साथ ईश्वरीय स्वभाव में सहभागी है। इस तथ्य से कि तीन व्यक्तियों से ईश्वरीय स्वभाव बनता है, कुछ लोग यह गलत निष्कर्ष निकालते हैं कि तीन अलग-अलग परमेश्वरों से परमेश्वरत्व बनता है। हम इस गलत अवधारणा को इन तीन चक्रों से समझा सकते हैं:

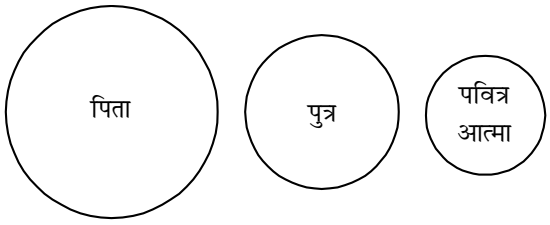

ऊपर दी गई अवधारणा में यह माना जाता है कि पिता पूरी तरह से ईश्वरीय है (जैसा तीन चक्रों में से सबसे बड़े के द्वारा दिखाया गया है) और सुझाव दिया जाता है कि पुत्र और आत्मा परमेश्वर से कम ईश्वरीय स्वभाव वाले हैं। यह सत्य है कि पिता पूरी तरह ईश्वरीय है, पर हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि पुत्र और आत्मा किसी भी प्रकार से कम नहीं हैं। पुत्र ने पृथ्वी पर आने के लिए पिता के अधिकार को मान लिया (तुलना फिलिप्पियों 2:5-8) और पवित्र आत्मा को यीशु के अधिकार या नाम में पृथ्वी पर भेजा गया (यूहन्ना 14:26)। तौ भी यीशु के पिता की इच्छा को मानने और आत्मा का यीशु की इच्छा को मानने से (जैसा छोटे चक्रों से सुझाव दिया जाता है) पुत्र या आत्मा किसी भी रीति से परमेश्वर पिता से कम ईश्वरीय स्वभाव वाले नहीं बन जाते। अन्य शब्दों में, यीशु शरीर में रहते हुए भी परमेश्वर (मत्ती 1:23), और पवित्र आत्मा पृथ्वी पर अपना काम करते हुए (तुलना प्रेरितों 5:3, 4) भी परमेश्वर ही रहता है (पूरी तरह से ईश्वरीय स्वभाव में)। प्रमाण के आधार पर, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हमारे उदाहरण वाले चक्र केवल तभी सही हो सकते हैं, यदि उन्हें परमेश्वरत्व के बीच अधिकार के अलग-अलग स्तरों के रूप में दिखाया जाए। पिता का अधिकार पुत्र के अधिकार से अधिक है और पुत्र का अधिकार आत्मा के अधिकार से अधिक है; फिर भी परमेश्वरत्व का प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभाव में समान रूप से ईश्वरीय है।

परमेश्वरत्व की बाइबल की अवधारणा को नीचे दिखाए गए तीन आपस में जुड़े चक्रों से समझाया जा सकता है:

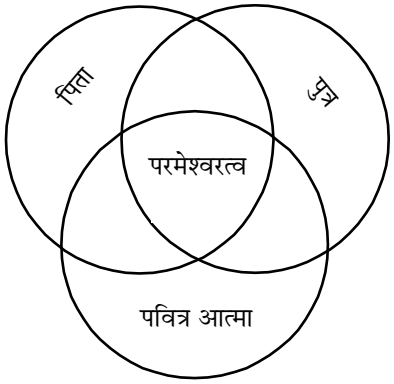

जैसा कि ऊपरी रेखाचित्र में दिखाया गया है, तीन सदस्यों से परमेश्वरत्व बनता है; फिर भी परमेश्वर केवल एक ही है (तीन अलग-अलग परमेश्वर नहीं)। परमेश्वरत्व का प्रत्येक सदस्य अपने स्वभाव में समान रूप से ईश्वरीय है (जैसा कि प्रत्येक चक्र के समान आकार से दिखाया गया है)। उनका अस्तित्व तथा काम एक-दूसरे के साथ इतने जुड़े हुए हैं कि उन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। (चक्रों को मिलाने से यही संकेत मिलता है।) तीन सदस्यों से परमेश्वरत्व के बनने और इनमें से प्रत्येक सदस्य की अतीत में विलक्षण भूमिकाओं के कारण, तीनों में अन्तर किया जाना आवश्यक है (तुलना करें मत्ती 3:16, 17; लूका 1:35; यूहन्ना 15:26)। उदाहरण के लिए, मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर रहने वाला यीशु ही था, जो हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा। यह उसकी विलक्षण भूमिका थी। परन्तु शरीर में रहते हुए भी यीशु पिता में था, और पिता उसमें था (तुलना करें यूहन्ना 14:10, 11)। यीशु ने अपने पिता के साथ उस सम्बन्ध को जो पहले से था, यह कहकर बताया, ''जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है'' (यूहन्ना 14:9)।

उसकी विलक्षण भूमिका

नये नियम की कलीसिया में पवित्र आत्मा की भूमिका इस बात में भी विलक्षण है कि मसीही युग में वह परमेश्वरत्व का प्रतिनिधि है। आत्मा और परमेश्वरत्व के अन्य दोनों सदस्यों के बीच ऐसा सम्बन्ध है कि यीशु ने यह घोषणा की कि आत्मा के वास के द्वारा ही हम ''जानेंगे कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में और मैं तुम में'' (यूहन्ना 14:20)।

परमेश्वरत्व के तीनों सदस्य एक सनातन परमेश्वर के लिए मिलकर काम करते हैं। कोई ईश्वरीय सदस्य अपने आप को दूसरे दोनों सदस्यों से अलग करके एक सच्चे परमेश्वर के रूप में काम नहीं कर सकता। जहां एक है, वहीं दूसरे भी हैं।

इस सच्चाई का केवल एक अपवाद क्रूस पर यीशु की मृत्यु है। यीशु द्वारा क्रूस पर हमारे पाप ले जाने के समय, पिता ने अपने सिद्ध पुत्र को ही पाप के रूप में देखा! तब, यीशु, ''जो पाप से अज्ञात था'' (2 कुरिन्थियों 5:21) ''हमारे लिए पाप ठहराया'' गया।

इतिहास के उस भयंकर क्षण का परिणाम यह था कि पिता और आत्मा यीशु से अपनी पवित्र उपस्थिति हटाने को विवश थे। ''यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, ... हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46)। अनन्तकाल में केवल यहीं और केवल एक बार, परमेश्वरत्व के तीनों सदस्यों के सम्बन्ध में दरार पड़ी थी।

सारांश

अन्त में, उन कुछ व्यावहारिक पाठों पर ध्यान देते हैं, जिन से हम सब को प्रोत्साहन मिले।

यह तथ्य कि पवित्र आत्मा एक अवैयक्तिक प्रभाव के बजाय व्यक्ति है, हमें उस दिलचस्पी के लिए धन्यवाद करना चाहिए, जो हमारे अनन्त उद्धार में स्वर्ग ने दिखाई है।

पवित्र आत्मा मसीही व्यक्ति में रहता है। इससे हमें दुष्टता की आत्मिक सेनाओं के विरुद्ध अपने युद्ध में बड़ा प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

हमारे लिए पवित्र आत्मा का प्रेम और प्रार्थना में हमारे लिए उसकी सिफारिश से हमें और बारम्बरता तथा भरोसे से प्रार्थना करने का प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

पवित्र आत्मा केवल उन्हीं को दिया जाता है, जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं। (प्रेरितों 5:32); इसीलिए सब गैर मसीहियों को मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए, ताकि वे भी उद्धार के परमेश्वर के दान के रूप में पवित्र आत्मा को पा सकें (प्रेरितों 2:38)।